शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

हिंदी दलित कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. दीपक, सहायक आचार्य

हिंदी–विभाग, चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा, हरियाणा

मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है। समाज के प्रति उसके रोष, प्रतिरोध, विद्रोह आदि भाव भले ही उत्पन्न हो, परंतु उसे अंततः समाज में ही जीवन–यापन करना होता है। अपने स्वतंत्र व्यक्त्वि के लिये भटकने वाले व्यक्ति को भी समाज में ही रहना पड़ता है। सामाजिक प्रगति के साथ–साथ ही उसमें वैचारिक प्रगति होती है। सामाजिक और भौतिक परिस्थितियों का प्रभाव मनुष्य पर पड़ना निश्चित है। इस बात का समर्थन करते हुए मार्क्स लिखते हैं– ''मनुष्य के जीवन विकास को प्रधानतः अर्थ और उत्पादन जनित परिस्थितियाँ ही नियंत्रित करती हैं और इस प्रकार मानव और मानव समाज का रूप बदलता रहता है।''[1] इसका निचोड़ रूप यह है कि समाज शाषेक और शोषित दो भागों में बँटा हुआ हैं। बाहुबली वर्ग शाषेक है जो धन, बल सम्पन्न होने के कारण शोषित वर्ग का खून चूसता रहता है। साहित्य में भी शोषक गर्व की विचारधारा का बोलबाला समसामयिक साहित्यिक कृतियों में दिखाई देता है। क्योंकि शाषेक वर्ग धन का प्रलोभन देकर समाज की यथार्थ स्थितियों को साहित्य में आने से रोकता है। प्रत्येक युग में साहित्य के साथ यही होता आया है। अतः न केवल हिंदी साहित्य, बल्कि पूरे भारत का साहित्य युग सत्य से पलायन कर गया है।

समाजशास्त्र में समाज का यर्थाथ आइना प्रस्तुत किया जाता है और सच्चा समाजशास्त्री समाज का वैज्ञानिक विश्लेषण कर यथार्थ बोध करवाता है। विज्ञान से तात्पर्य है– विशेष प्रामाणिक ज्ञान। इससे अभिप्राय है कि समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। इसमें समाज और मानवीय संबंधों के विषय में व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध ज्ञान को उपलब्ध कराना है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री के. युंग के अनुसार ''समाजशास्त्रीय अध्ययन अथवा सामाजिक अनुसंधान, नए कथ्यों की खोज या पुराने कथ्यों, उनके क्रमों पारस्परिक संबंधों, कारकों और उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों के परीक्षण की व्यवस्थित पद्धति है।''[2]

आधुनिक समाजशास्त्र में स्वतंत्र अध्ययन की विशेषता में विकास देखा जा रहा है। आधुनिक समाजशास्त्री मर्टन ने समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिये कुछ विशिष्ट मानदण्डों का निरूपण किया है। सोशियोलॉजी ऑफ लिवेयर द्वारा इंग्लैण्ड, अमेरिका में साहित्य का अच्छा अध्ययन किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप पारिवारिक संदर्भों में बदलते हुए दृष्टिकोण, मूल्यों, आकांक्षाओं और अंतरपारस्परिक संबंधों में अनेक नये तथ्य प्रकाश में आये हैं।[3] किंतु समीक्षा के अध्ययन का श्रेय कार्लमार्क्स को ही जाता है। मार्क्सवाद द्वारा प्रतिपादित

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धति में दो प्रमुख दृष्टिकोण का मूल्यांकन किया जाता है। पहला उस कृति को जो विशेष रूप प्राप्त हुआ है उसका उस कृति के निर्माण का सामाजिक से क्या संबंध है? तथा दूसरा कृति विशेष या आलोच्यकृति का तात्कालीन समाज पर क्या प्रभाव पड़ा? उसने सामाजिक जीवन की दिशा को किस प्रकार प्रभावित किया?[4]

इन दोनों तथ्यों से विदित होता है कि साहित्यकार को अपने साहित्य में व्यक्ति और समाज के विकास में सहायता करने की ताकत होनी चाहिए। आधुनिक विज्ञान के इस युग में युग और मार्क्स के सिद्धांतों का मूल्यांकन बढ़ता गया है, पर हिंदी साहित्य हो या भारतीय दलित साहित्य उसमें विशेषतः फूले एवं डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के सिद्धांतों एवं विचारों का प्रतिपादन होता आ रहा है। इन्हीं के विचारों के आधार पर दलित साहित्य एक सैलाब रूप में फूट पड़ा है। जो आगामी समाज के लिए शुभ और समता लाने का संकेत है। दलित साहित्य पूरे समाज का साहित्य है और यह समाज को बदलने में कटिबद्ध है। यह साहित्य की मूल धारा से हट कर एक नए साहित्य का सर्जक है, जो नवीन मानवतावादी मूल्यों की स्थापना के लिये आतुर है। यह सवर्ण, ब्राह्मणवादी भेद भावपूर्ण दृष्टि नहीं, यह बस मानव समानता का दर्जा चाहने वाले महात्माओं की दृष्टि है। यह दलित साहित्यकारों की बराबरी की लड़ाई है। यह स्वाभिमान और आत्मसम्मान का संघर्षशील साहित्य है। यह कोई शिल्परहित व घटिया, भेद भाव का साहित्य नहीं, यह सच्चे समाज का, जातिविहीन, नये समाज एवं मानवतावाद का साहित्य है। यह सर्वहारा मजदूर वर्ग का साहित्य है, जो समाज का अंग है। समाज की पहचान है। यह दलित समाज का अनुभवजन्य यथार्थ पर आधारित साहित्य है। इसलिए इस साहित्य को वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन की आवश्यकता है, जो सामाज के सामने इसके औचित्य को प्रस्तुत कर सके। इसकी सार्थकता यथार्थता का मूल्यांकन कर सके तथा अन्य साहित्यां` की अपेक्षा उत्कृष्ट, सर्वश्रेष्ठ एवं सफल साहित्य होने का दावा पेश कर सके।

ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'कूड़ाघर' कहानी में दलित चते ना का यथार्थ प्रस्तुत किया गया है। इसमें दलितों के अंदर एक दूसरे को सीढ़ी बना कर ऊपर उठने की होड़ का चित्रण है। इसका मुख्य कथ्य आरक्षण के लागू होने की घोषणा को लेकर उठे बवाल को दिखा कर भारतीय सवर्ण समाज की विरोधी मानसिकता का उल्लेख किया है। इन्हीं की 'घुसपैठिये' कहानी में आरक्षण से उपजे आक्रोश और दलित छात्रों का मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न को मेडिकल कॉलेजों के संदर्भ में उल्लेख किया गया है। सवणों की कुदृष्टि को मेडिकल कॉलेजों के संदर्भ में आरक्षण का अर्थ सवर्णों की सीटों पर दलितों की घसु पैठ से है। सैली बलजीत की कहानी 'चांडाल नहीं' का नायक मुर्दों को जलाने की लड़की की गाड़ी का चालक होने के कारण चांडाल के पेशे से अभिहित होता है। अपने परिवार के पालन हेतु व्यवसाय की जड़ता का चित्रण है। यह दलित चते ना पर प्रश्न चिह्न लगाती कहानी है। रामधारी सिंह दिवाकर कृत 'चोर दरवाजा' भी दलित विमर्श एवं मार्क्सवादी चेतना को इंगित

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

करती है। इसमें सवर्ण ठाकुरों के दलितों पर भेद भाव एवं अत्याचारों का चित्रण है। ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'प्रमोशन' में दलित संवदे ना को उजागर किया गया है। उदयप्रकाश कृत 'पीली छतरी वाली लड़की' में विश्वविद्यालयीन वातावरण में जातिभेद, बलात्कार, सरकारी धन का दुरूपयोग आदि सामाजिक बुराइयों को चित्रित किया गया है।

इनके अलावा भारतीय समाज में दलित जीवन की स्थिति एवं गति का चित्रण रमणिका गुप्ता कृत 'भूत सवार', प्रेमिला कृत 'महर्षि के अंगूठे की छाप', सत्य प्रकाश कृत 'लात', विपिन बिहारी कृत 'षडयंत्र' मधु संधु कृत 'स्वप्नदाह' वी. एल. नैय्यर कृत 'हमेशा से ही' सूरजपाल सिंह कृत 'हैरी कब आयेगा, साजिश, छूत कर दिया, सुशीला टाकभौरे कृत सिलिया, टूटता बहम, जयप्रकाश कर्दम कृत नो बार, परदेशी राम वर्मा कृत दिन–प्रतिदिन, रूपनारायण सोनकर कृत जहरीली जड़ें, मनोज सोनकर कृत जांच, रानी मीनू कृत 'हम कौन हैं' आदि उल्लेखनीय हैं।

जयप्रकाश कर्दम कृत 'छप्पर' दलित साहित्य का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास ने साहित्य जगत पर अपना विषेश प्रभाव छोड़ा है। इसके अलावा भगवान दास कृत 'मैं भंगी हूँ' में समस्त दलित समाज के इतिहास की कहानी कही गई है। जो ब्राह्मणवादी छद्म से बार–बार मार खाता अपने दीन–दरिद्र जीवन जीने पर मजबूर होता जा रहा है। उसे जगाने–चते ने का काम लेखक ने इस पुस्तक में किया है। रूपनारायण सोनकर कृत, सूवरदान में दलित उत्पीड़न एवं समाज के प्रति उनके श्रमदान को कर्मदान की संज्ञा दी है। दलित समाज की पारस्परिक स्थिति उनके आक्रोश, विक्षोभ एवं चते ना का उल्लेख करने वाले हिंदी के दलित उपन्यासकारों में प्रेम कपाड़िया कृत मिट्टी की सौगंध, सत्यप्रकाश कृ त जसतस भई सबेरा, मोहनदास नैमिशराय कृत मुक्ति पर्व, अजय नवारिया कृत उधार के लोग आदि के नाम लिये जा सकते हैं।

हिंदी दलित कथा साहित्य में निहित भारतीय समाज के यथार्थ एवं सच्चाई वैज्ञानिक विचारधारा से प्रभावित है या नहीं? उसके स्वरूप एवं दिशा का लेखकों ने कहाँ तक परिमार्जन किया है? इसकी उपलब्धियाँ क्या हैं? किस प्रकार लेखकों ने पुराने संदर्भ में नवीन प्रयोगों की खोज की है, आदि तथ्यों एवं कथ्यो ं की वैज्ञानिक जानकारी इस दलित कथा साहित्य में प्रस्तुत है। इन लेखकों ने समाज में निहित मनुवादी दृष्टि का विश्लेषण–विवेचन कर आज के दलित कथा साहित्य को समाज एवं साहित्य हेतु उपयोगी बनाया है। जिसका उद्देश्य सवर्णों की हीन भावना को वैज्ञानिक तर्कों और तथ्यों द्वारा करारा जवाब देना है। आज के संदर्भ में हिंदी दलित कथा साहित्य समाज को अम्बेडकरवादी विचारधारा से अवगत कर भावी पाठकों एवं शोधार्थियों का मार्ग सुलभ करना है।

शोधबोधालय
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN : 2584-1807
वर्ष 1, अंक 1, अक्टूबर-दिसंबर 2023
Online Available : http://shodhbodh.com/

संदर्भ

1. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, नई कविता रस और सिद्धांत, पृ. 42
2. डॉ. महेश दिवाकर, हिंदी नई कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ. 20
3. डॉ. रघुवीर सिन्हा, हिंदी कहानी, समाजशास्त्रीय दृष्टि, भमिका, पृ. 4–5
4. डॉ. महेश दिवाकर, हिंदी नई कहानी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृ. 20